उर्द के प्रमुख कीट
कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 58–60

उर्द के प्रमुख कीट एवं उनका समेकित प्रबंधन

सौरभ माहेश्वरी[1] एवं मनीष जिंदल[2]
[1]स्नातकोत्तर शोध छात्र, [2]परियोजना सहायक
कीट विज्ञान विभाग,
गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
पंतनगर, उत्तराखंड, भारत।
Email Id: sourabhmaheshwari1998@gmail.com

तना मक्खी

तना मक्खी गहरे धात्विक रंग की होती है तथा इसके काचाभ पंखो पर पर्शुक क्षेत्रों में बिल्कुल अलग–अलग खांचे होते हैं। इसका प्रकोप फसल की प्रारंभिक अवस्था में होता है। मादा कीट पत्ती के निचले भाग में अंडे देती है तथा इस कीट का मैगट तने को भीतर ही भीतर खाता है तथा तने में दरार उत्पन्न कर देता है। क्षतिग्रस्त पौधे की पत्तियाँ सूखकर गिरने लगती है और इस प्रकार पूरा पौधा सूखकर गिर जाता है।

सफेद मक्खी

यह आकार में छोटी, शरीर सफद रंग का तथा शरीर के ऊपर चूर्ण होता है। मादा कीट पत्तियों की निचली सतह पर अंडे देती है। एक सप्ताह में अंडे से अर्भक निकलते हैं जो कि निकलते ही पत्तियों का रस चूसना शुरू कर देते हैं। इस कीट के अर्भक पौधों की पत्तियों एवं कोमल तनों का रस चूसते हैं।यह कीट पीली मोजैक वायरस का वाहक भी होता है।

थ्रिप्स

यह कीट छोटे, बेलनाकार, गहरे भूरे रंग के होते है एवं पंख लम्बे एवं फटे हुए होते हैं। मादा अंडे पत्ती के भीतर कोशिकाओं में देती है। अंडो से 4–5 दिन में अर्भक निकलते हैं। 8–15 दिन में यह पूर्ण विकसित होकर भूमि पर गिर कर प्यूपा में परिवर्तित हो जाते हैं। यह फूल और फली बनते समय कलिकाओं, पुष्पों और फलियों का रस चूसकर नुकसान पहुँचाते हैं। अत्यधिक प्रकोप होने पर फूल गिर जाते हैं जिसके फलस्वरूप उपज में भारी गिरावट होती है।

बग (मत्कुण)

रिपटोरटस जाति का मत्कुण कीट प्रमुख है। इनका रंग भूरा–काला एवं आकार अर्ध्दचन्द्राकार होता है तथा इनके द्वारा अंडे पत्तियों पर समूहों में दिये जाते हैं। दूसरे मत्कुण को नेजारा कहते हैं। इसके प्रौढ़ कीट हरे रंग के होते हैं। परंतु निम्फ भूरे–लाल रंग के होते हैं। इनके शरीर पर अनेक धब्बे पाए जाते हैं। निम्फ और प्रौढ़ पत्तियों, फूलों और फलियों का रस चूसते हैं। गर्मी की फसल में इन मत्कुण कीड़ों का प्रकोप होने पर फूल तथा फलियाँ सूख जाती है। बीज छोटे आकार का एवं सिकुड़ जाता है। बीजों के ऊपर गहरे धब्बे पाए जाते हैं एवं अंकुरण क्षमता समाप्त हो जाती है। प्रभावित दाना खाने योग्य नहीं रहता।

बिहार रोमिल सूड़ी

इस कीट का पतंगा मध्यम आकार का, हल्का भूरे रंग का पीलापन लिये हुए होता है। पंखो पर

काले–काले धब्बे तथा उदर का ऊपरी हिस्सा लाल रंग का होता है। मादा पत्ती पर झुंड में अंडे देती है। इल्लियाँ जिस पत्ती पर होती है उस पत्ती को छलनी बना देती हैं अर्थात उस पत्ती की ऊपरी सतह बिल्कुल साफ हो जाती है और केवल शिराओं का जाल ही बच जाता है। बाद में यह इल्लियाँ तितर–बितर होकर पत्तियों में छेद करके खाना आरंभ कर देती है जिससे की पूरी पत्ती भी समाप्त हो जाती है।

तम्बाकू सूड़ी

इस कीट के शलभ मध्यम आकार का होता है तथा इसके अगले पंखो पर सुन्दर एवं सुनहरे भूरे रंग के धब्बे पाए जाते हैं। मादा पतंगा समूह में अंडे पत्ती पर देती है जो कि रोओं से आच्छादित रहते हैं। अंडो से 4–5 दिन में सूड़ी निकल आती है। 2–3 सप्ताह में सूड़ी पूर्ण विकसित हो जाती है उसके बाद भूमि पर पड़े डंठलो में कोकून बन जाती है। सूड़ी पत्तियों में जाला बनाकर खाती है। सूड़ी बड़ी होने पर पत्तियों में छेद करके खाती है।

चित्तीदार फली बेधक (मरूका विट्राटा)

प्रौढ़ कीट भूरे रंग का शलभ होता है। अगले पंखो में दो सफेद धब्बे होते हैं और पंख के किनारे पर छोटे–छोटे काले धब्बे एवं लहरियादार धारी होती है। मादा पत्तियों, फूलों और छोटी डालियों पर अण्डे देती है। सूड़ी बेलनाकार होती है तथा इसके प्रत्येक खंड पर छोटे–छोटे रोम होते हैं जो हल्के पीले एवं हरे–भूरे रंग के होते हैं। चित्तीदार फली बेधक की सूँड़ी कलियों, फूलों व फलियों एवं पत्तियों को मिलाकर गुच्छा सा बना लेती है और अन्दर ही अन्दर पौधे के भागों को खाती रहती हैं। ग्रसित फूल रंगहीन भूरे होकर गिर जाते हैं।

फली बेधक (हैलिकोवर्पा आर्मीजैरा)

प्रौढ़ शलभ मजबूत एवं हल्के भूरे रंग के होते हैं। इसके अग्र पंखो पर भूरे बिंदु होते हैं। जोकि धारीदार रेखाएं बनाते हैं ऊपर की तरफ काले रंग के धब्बे पड़े रहते हैं। मादा शलभ रात्रि में एक–एक करके अंडे देती है। नवजात सूड़ी पत्तियों, फूलों तथा कोमल शाखाओं को खाना शुरू कर देती है। फली बेधक की सूड़ी कुछ समय इधर–उधर पत्तियों में घूमकर फूल तथा फली में तथा फल में पहुँचकर उसमें छेद करके खाती हैं। इसकी सूड़ी जब बड़ी हो जाती है तो सूड़ी को आधा भाग फली के अंदर तथा आधा भाग बाहर निकाले हुए खाते हुए देखा जाता है।

उर्द के समेकित कीट प्रबंधन

- मुख्य कीटों के प्रबंधन के लिये उर्द की सहिष्णु किस्मों का उपयोग करें।
- फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई करें ताकि नाशीजीव कीटो की निष्क्रिय अवस्था को सूरज की रोशनी एवं परभक्षी के द्वारा में लाकर उनकी संख्या को कम किया जा सके।
- फसल में उर्वरकों का संतुलित मात्रा में उपयोग करना चाहिय।
- फसल चक्रण को अपनाना चाहिये।
- चूसने वाले कीटों के प्रबंधन के लिये बीज का कीटनाशकों से बीज शोधन करना चाहिये।
- ज्वार, बाजरा आदि को अंतःफसल के रूप में लेना चाहिये।
- फली छेदक के लिये गेंदा और मडुआ फसल को ट्रैप फसल के रूप में लेना चाहिये।
- हेलिकोवर्पा आर्मिगेरा और स्पोडोप्टेरा लिटुरा के कीट प्रकोप की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप 6–8 ट्रैप/है. की दर से खेत में लगाना चाहिये।
- सफेद मक्खी तथा जैसिड्स के लिए 4–5 ट्रैपध्एकड़ की दर से पीले/चिपचिपे ट्रैप, जैसिड्स के लिए नीले पैन का प्रयोग करें।

- खेत में और उसके आसपास 1 ट्रैप प्रति एकड़ की दर से प्रकाश प्रपंच स्थापित करें।
- पीले मोजैक संक्रमित पौधों को सावधानी पूर्वक पौधों को नष्ट कर देना चाहिये।
- परभक्षी पक्षियों को प्रोत्साहित करने के लिए 20/एकड़ की दर से बर्ड पर्चों को लगाना चाहिये।
- फली बेधक के लिए सीमा फसल के रूप में ट्रैप फसल (गेंदा) और फिंगरमिलेट उगाना चाहिये।
- नीम के बीज का सत्व को 5 प्रतिशत अथवा वाणिज्यिक रूप से मौजूद फार्मूलों (एजाडिरैक्टिन 1500 पी.पी.एम.) का प्रयोग करें।
- प्राकृतिक शत्रुओं जैसे शिकारी स्टिंग बग (ईकोन्थेकोना फुरसेलटा), लेडी बर्ड बीटल, और *मेनोकाइल्स सेक्समैक्युलेटस*), ग्रीन लेसविंग, (*क्राइसोपा एसपी*), रेडुविड बग (*राइनोकोरिस एसपी*) लार्वा पैरासिटॉइड, (कोटेसिया एसपी) तथा उर्द में उपलब्ध मकड़ियों को संरक्षित करना चाहिए।

रासायनिक नियंत्रण

कीटों के प्रबंधन के लिए रासायनिक कीटनाशकों का आवश्यकता आधारित छिड़काव किया जाना चाहिए। कीटों के प्रबंधन के लिए निम्नलिखित कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है

कीट का नाम	कीटनाशक का नाम	मात्रा प्रति हैक्टेयर
फली बेधक	मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल.	423–625 मि.ली.
	थियोडिकार्ब 75% डब्ल्यू.पी.	625–750 ग्राम
	क्लोरेन्ट्रानीलिप्रोले 18.5% एस.सी.	100 मि.ली.
	फ्लूबेन्डामाइड 39.35% एस.सी.	100 मि.ली.
	फ्लूबेन्डामाइड 20% डब्ल्यू.जी.	300 ग्राम
	लूफैन्यूरॉन 5.4% ई.सी.	600 मि.ली.
	नोवाल्यूरॉन 05.25 %+इन्डोक्साकार्ब 4.50 % एस.सी.	825–875 मि.ली.
बिहार रोमिल सूड़ी	क्विनॉलफॉस 250% ई.सी.	1500 मि.ली.
तम्बाकू सूड़ी	फ्लूबेन्डामाइड 20% डब्ल्यू.जी.	300 ग्राम